अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) नय निक्षेप आदि का थोकड़ा कितने द्वारों से कहते हैं-
(क) 20 (ख) 25
(ग) 24 (घ) 35 (ख)

(ii) नो आगम से भाव निक्षेप के भेद होते हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 5 (घ) 7 (क)

(iii) आगम प्रमाण के भेद होते हैं-
(क) 11 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 02 (ग)

(iv) ठाणांग सूत्र अनुयोग का शास्त्र है-
(क) गणितानुयोग (ख) द्रव्यानुयोग
(ग) धर्मकथानुयोग (घ) चरणकरणानुयोग (ख)

(v) निगोद के जीव होते हैं-
(क) व्यवहार राशि (ख) अव्यवहार राशि
(ग) व्यवहार-अव्यवहार राशि (घ) दोनों नहीं (ग)

(vi) श्री संभवनाथ जी के शरीर की अवगाहना है-
(क) 500 धनुष (ख) 400 धनुष
(ग) 450 धनुष (घ) 300 धनुष (ख)

(vii) श्री विमलनाथ जी की दीक्षा पर्याय कितनी थी-
(क) 25 हजार पूर्व (ख) 21 लाख पूर्व
(ग)15 लाख पूर्व (वर्ष) (घ) 10 लाख पूर्व (ग)

(viii) श्री नमिनाथ भगवान का शासन काल कितना है-
(क) 5 लाख वर्ष (ख) 6 लाख वर्ष
(ग) 54 लाख वर्ष (घ) 83750 वर्ष (क)

(ix) ईर्यापथिक बंध किसको होता है-
(क) अयोगी वीतरागी (ख) सयोगी वीतरागी
(ग) सूक्ष्म संपराय चारित्र वालों को (घ) अप्रमादी साधु को (ख)

(x) समवसरण का थोकड़ा भगवती सूत्र के किस शतक में चलता है-
(क) 24 वाँ (ख) 28 वाँ
(ग) 29 वाँ (घ) 30 वाँ (घ)

(xi) मिश्र दृष्टि में समवसरण पाये जाते हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 1 (क)

(xii) 5 अनुत्तर विमान में समवसरण के 47 बोलों में से बोल पाये जाते हैं-
(क) 25 (ख) 26
(ग) 35 (घ) 30 (ख)

(xiii) केवली समुद्घात में केवली के किस योग की प्रवृत्ति होती है-
(क) मन योग (ख) वचन योग
(ग) काय योग (घ) तीनों योग (ग)

(xiv) केवली भगवान के चार अघाती कर्मों की कितनी प्रकृतियाँ की सत्ता रहती है-
(क) 80 (ख) 78
(ग) 88 (घ) 85 (घ)

(xv) शेषवत् अनुमान प्रमाण में अवयव के कितने भेद हैं-
(क) 18 (ख) 6
(ग) 5 (घ) 10 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) प्रमाण वस्तु के पूर्ण रूप को ग्रहण करता है। (हाँ)

(ii) सत्ता मात्र को ग्रहण करने वाला अपर संग्रह नय कहलाता है। (नहीं)

(iii) नैगम नय की दृष्टि से पदार्थ सामान्य-विशेष और उभयात्मक है। (हाँ)

(iv) पदार्थ का विशेष धर्म 'गुणी' कहलाता है। (नहीं)

(v) ज्ञान दर्शन आधार है और जीव आधेय है। (नहीं)

(vi) सुमति नाथ भगवान का जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था। (हाँ)

(vii) सुपार्श्वनाथ भगवान का लांछन स्वस्तिक है। (हाँ)

(viii) चन्द्रप्रभ स्वामी के कुल गणधर 95 थे। (नहीं)

(ix) बहुत भव आसरी दूसरा भंग है-बांधा था, बांधता है, बांधेगा। (नहीं)

(x) ईर्यापथिक बंध कम से कम अन्तर्मुहूर्त्त तक तो होता ही है। (हाँ)

(xi) समवसरण के थोकड़े में तीन विकलेन्द्रिय में तीन योग पाये जाते हैं। (हाँ)

(xii) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में 37 बोल पाये जाते हैं। (नहीं)

(xiii) क्रिया का अभाव मानने वाले अक्रियावादी हैं, इनके 84 भेद हैं। (हाँ)

(xiv) जम्बूद्वीप पूर्णिमा के चन्द्र जैसा वृत्ताकार है। (हाँ)

(xv) सभी केवलियों के लिए आवर्जीकरण अनिवार्य नहीं हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(i)	जम्बूद्वीप की परिधि	(क) 35 बोल	313227 योजन
(ii)	केवली समुद्घात का थोकड़ा	(ख)तीसरा भंग	पन्नवणा 36वाँ पद
(iii)	अक्रियावादी	(ग) 13 भव	84 भेद
(iv)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(घ) 18 हजार	35 बोल
(v)	मिश्र दृष्टि में	(च) 313227 योजन	दो समवसरण
(vi)	बांधा था, नहीं बांधता है, बांधेगा	(छ) पन्नवणा 36वाँ पद	तीसरा भंग
(vii)	भगवान ऋषभदेव के	(ज) 84 भेद	13 भव
(viii)	भगवान अरिष्टनेमी के साधु	(झ) दो समवसरण	18 हजार
(ix)	भगवान पार्श्वनाथ की दीक्षा पर्याय	(य) भानु	70 वर्ष
(x)	मुनि सुव्रतजी का छद्मस्थ काल	(र) एवंभूतनय	11 मास
(xi)	पाँच समिति	(ल) 3	अपवाद मार्ग
(xii)	सिद्धावस्था को सामायिक मानने वाला	(व) बादर-निगोद	एवंभूतनय
(xiii)	नैगम नय के भेद	(क्ष) अपवाद मार्ग	3
(xiv)	धर्मनाथ जी के पिता का नाम	(त्र)11 मास	भान
(xv)	प्याज	(ज्ञ) 70 वर्ष	बादर-निगोद

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मैं तीनों कालों और चारों निक्षेपों को मानता हूँ।	नैगम नय
(ii)	मैं वर्तमान क्षण में होने वाली पर्याय को मुख्य रूप से ग्रहण करता हूँ।	ऋजुसूत्र नय
(iii)	हम दोनों अनेकान्त की आधार-शिला है।	नय-निक्षेप
(iv)	मैं 9 प्रकार से की जा सकती हूँ।	व्याख्या
(v)	मेरी माता का नाम मंगला था।	सुमतिनाथ जी
(vi)	मेरी साध्वियों की संख्या 61,600 थी।	शान्तिनाथ जी
(vii)	मैंने 42 हजार वर्ष तक राज्य किया था।	अरनाथ जी
(viii)	मेरे भवों की संख्या दस थी।	पार्श्वनाथ जी
(ix)	मेरा बंध संख्यात वर्ष की आयु वाले सयोगी वीतरागियों को ही होता है।	ईर्यापथिक बंध
(x)	मैं चौदहवें गुणस्थान के प्रथम समय में पाया जाता हूँ।	चौथा भंग
(xi)	मुझमें 47 बोल पाये जाते हैं।	मनुष्य/समुच्चय
(xii)	मैं उन जीवों की अपेक्षा हूँ, जो उसी भव में मोक्ष न जा सके।	अचरम उद्देशक
(xiii)	बादर, पृथ्वी, पानी, वनस्पति की पर्याप्त अवस्था में मैं नहीं रहती हूँ।	तेजो लेश्या
(xiv)	केवली समुद्घात वाले केवली समुद्घात से पहले मुझको करते हैं।	आवर्जीकरण
(xv)	मैं केवली समुद्घात के दूसरे, छठे, सातवें समय में प्रवर्तता हूँ।	औदारिक मिश्र काय योग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) केवली समुद्घात के चौथे समय में क्या किया जाता है ?

उ. चौथे समय में मथान आकार में रहे आत्म-प्रदेशों से शेष बचे हुए अन्तरालों को पूर्ण कर सम्पूर्ण लोक व्यापी बनाया जाता है, अतः कार्मण काय योग होता है।

(ii) क्या तीर्थंकर केवली समुद्घात करते हैं ? कोई एक प्रमाण दीजिए।

उ. आवश्यक निर्युक्ति और छठे कर्म ग्रन्थ के उल्लेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तीर्थंकर भगवान भी केवली समुद्घात करते हैं।

छठे कर्मग्रन्थ में बतलाया गया है कि सामान्य केवलज्ञानियों के केवली-समुद्घात के तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में नामकर्म की 20 प्रकृतियों का उदय रहता है और यदि तीर्थंकर भगवान केवली समुद्घात करते हैं तो उनके इस अवस्था में एक तीर्थंकर प्रकृति का भी उदय होने से नामकर्म की 21 प्रकृतियों का उदय रहता है। इस प्रमाण से स्पष्ट होता है कि तीर्थंकर भगवाल केवली समुद्घात करते हैं।

(iii) सिद्ध गति में जीव कैसे बने रहते हैं ?

उ. सिद्ध गति में ये सिद्ध भगवान् सदा के लिए अशरीरी, जीव घन (घनीभूत जीव प्रदेश वाले) दर्शन-ज्ञान से उपयुक्त, कृतकृत्य, नीरज, निष्कम्प, वितिमिर (कर्म रूप अंधकार से रहित) और विशुद्ध बने रहते हैं। सभी दुःखों से जन्म-जरा और मरण के बंधन से मुक्त, ये सिद्ध शाश्वत, अव्याबाध सुख से सदैव सुखी रहते हैं।

(iv) अनन्तर उपपन्ना उद्देशक में किसका वर्णन है ?

उ. जिन जीवों को उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों का वर्णन है।

(v) विनयवादी के 32 भेद कैसे बनते हैं ?

उ. देव, राजा, मति (यति), ज्ञाति, स्थविर, अधम, माता और पिता, इन आठों का मन, वचन, काया और दान इन चार प्रकार से विनय होता है। अतः 8 X 4 = 32 भेद होते हैं।

(vi) सम्यग्दष्टि में कितने व कौनसे समवसरण पाये जाते हैं ?

उ. सम्यग्दृष्टि में एक समवसरण (क्रियावादी) पाया जाता है।

(vii) एक भव आसरी तीसरा भंग किसमें पाया जाता है ?

उ. तीसरा भंग उपशम श्रेणि से गिरे हुए (पडिवाई) में पाया जाता है, क्योंकि उपशम श्रेणी से नीचे गिरे हुए के ईर्यापथिक बंध नहीं होता, किन्तु जब वह उसी भव में पुनः उपशम श्रेणी करेगा, तब ईर्यापथिक बंध अवश्य करेगा।

(viii) सुविधिनाथ जी के माता-पिता का नाम क्या था ?

उ. माता- रामा। पिता-सुग्रीव

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) ईरियावही (इर्यापथिकी)बन्ध के आठ भंगों के नाम लिखिए।

उ. 1. बांधा, बांधता है, बांधेगा। 2. बांधा, बांधता है, नहीं बांधेगा।
3. बांधा, नहीं बांधता है, बांधेगा 4. बांधा, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा
5. नहीं बांधा, बांधता है, बांधेगा 6. नहीं बांधा, बांधता है, नहीं बांधेगा
7. नहीं बांधा, नहीं बांधता है, बांधेगा 8. नहीं बांधा, नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा

(ii) सूक्ष्म-निगोद का स्वरूप बताइए।

उ. जिन जीवों के सूक्ष्म नाम कर्म का उदय होने के साथ ही जो अनन्तकायिक भी हों, वे सूक्ष्म निगोद के जीव कहलाते हैं। ये सम्पूर्ण लोक में ठसाठस भरे हुए हैं। ये किसी भी अस्त्र, शस्त्र आदि से प्रतिघात को प्राप्त नहीं होते हैं।

(iii) सप्तभंगी के नाम लिखिए।

उ. 1. स्याद् अस्ति 2. स्याद् नास्ति 3. स्याद् अस्ति-नास्ति
4. स्याद् अवक्तव्य 5. स्याद् अस्ति अवक्तव्य 6. स्याद् नास्ति अवक्तव्य
7. स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्य।

(iv) आठ पक्षों का नामोल्लेख कीजिए।

उ. 1. नित्य 2. अनित्य 3. एक 4. अनेक
5. सत् 6. असत् 7. वक्तव्य 8. अवक्तव्य

(v) रूपस्थ ध्यान का अर्थ लिखिए।

उ. सशरीर अरिहन्त भगवन्त की शांत मुद्रा का स्थिरचित्त से ध्यान करना रूपस्थध्यान है। ध्यान में भी वीतराग देव के शरीर के अवयवों से अभिव्यक्त होने वाली आत्मिक आभा की ओर यानि ज्योति की ओर बढ़ने के लिए प्रशान्तता आने पर ही वीतराग दशा पाई जा सकती है आदि भावात्मक स्थिति से चिन्तन रूपस्थध्यान कहलाता है।

(vi) उत्सर्ग व अपवाद मार्ग को कोई एक उदाहरण से समझाइए।

उ. नोटः- इनमें से कोई एक मान्य-

उ. 1. सर्वथा अहिंसा का पालन करना उत्सर्ग मार्ग है, किन्तु नदी उतरना, नौका में बैठना, नौकल्पी विहार करना यह उत्सर्ग मार्ग में भी अपवाद है।

2. जिनकल्प उत्सर्ग मार्ग है और स्थविर कल्प अपवाद मार्ग हैं।

3. 'करेमि भंते सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' यह उत्सर्ग मार्ग का पाठ है और 'जयं चरे जयं चिट्ठे' यह अपवाद मार्ग का पाठ है।

4. 'समयं गोयम मा पमायए' यह उत्सर्ग मार्ग है और 'कालेण निक्खमे भिक्खु' यह अपवाद मार्ग हैं।

5. आचारांग, दशवैकालिक, प्रश्नव्याकरण आदि सूत्रों में जो मुनि-मार्ग है, वह उत्सर्ग मार्ग है और छेद सूत्रों में जो मुनि-मार्ग है, वह अपवाद मार्ग है।

6. परीषह अध्ययन में रोग आने पर औषधि नहीं लेना उत्सर्ग मार्ग है और भगवती सूत्र तथा छेद सूत्रों में निरवद्य औषधि लेना, अपवाद मार्ग है।

(vii) उपमा प्रमाण के चार भेदों के नाम लिखिए।

उ. 1. यथार्थ वस्तु यथार्थ उपमा 2. यथार्थ वस्तु अयथार्थ उपमा

3. अयथार्थ वस्तु यथार्थ उपमा 4. अयथार्थ वस्तु अयथार्थ उपमा

(viii) ईर्यापथिक बंध में सादि-सांत ही भंग पाया जाता है, कारण सहित लिखिए।

उ. ईर्यापथिक बंध में सादि-सपर्यवसित (सादि-सान्त) भंग ही पाया जाता है, क्योंकि इसका बंध ग्यारहवें गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक के सयोगी वीतरागियों में ही होता है। अयोगी अवस्था में तथा सिद्धों में बंध नहीं होता, अतः अपर्यवसित (अनन्त) नहीं होता। मिथ्यात्व आदि नीचे के 10 गुणस्थान में भी बंध नहीं होता, इसलिए अनादि (अणाइया) बंध भी नहीं होता।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) संकल्प मात्र को ग्रहण करने वाला नय है-
(क) व्यवहार (ख) ऋजुसूत्र
(ग) संग्रह (घ) नैगम (घ)

(b) निश्चय को प्रकट करने वाला है-
(क) आत्मा (ख) भाव
(ग) मन (घ) व्यवहार (घ)

(c) अपने मूल स्वरूप में स्थिर रहना है-
(क) व्यय (ख) ध्रौव्य
(ग) ज्ञेय (घ) विशेष (ख)

(d) श्री सुमतिनाथ स्वामी के गणधरों की संख्या थी-
(क) 116 (ख) 100
(ग) 107 (घ) 95 (ख)

(e) श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी का लांछन था-
(क) क्रौंच (ख) वानर
(ग) चन्द्र (घ) स्वस्तिक (घ)

(f) श्री संभवनाथ स्वामी के प्रथम गणधर का नाम है-
(क) सिंहसेन (ख) चारु
(ग) वज्रनाभ (घ) चमर (ख)

(g) उपशम श्रेणि से गिरे हुए जीव की संज्ञा है-
(क) प्रतिपद्यमान (ख) पूर्व प्रतिपद्यमान
(ग) पडिवाई (घ) क्षपक (ग)

(h) ईर्यापथिक बंध नहीं होता है-
(क) 11वें गुणस्थान में (ख) 12वें गुणस्थान में
(ग) 13वें गुणस्थान में (घ) 14वें गुणस्थान में (घ)

(i) जम्बूद्वीप है-
(क) योजन सबसे छोटा (ख) गोलाकार
(ग) वृत्ताकार (घ) तीनों ही प्रकार (घ)

(j) केवली समुद्घात का वर्णन नहीं मिलता है-
(क) आवश्यक निर्युक्ति (ख) लोक प्रकाश
(ग) प्रवचन सारोद्धार (घ) आचारांग सूत्र (घ)

(k) केवली भगवान के अशुभ नाम कर्म की प्रकृतियाँ सत्ता में रहती है-
(क) 80 (ख) 52
(ग) 28 (घ) 02 (ग)

(l) मिश्र दृष्टि में समवशरण पाये जाते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ख)

(m) अनुत्तर विमान में 47 बोलों में से पाये जाते हैं-
(क) 33 (ख) 27
(ग) 26 (घ) 43 (ग)

(n) विनयवादी के विनय का प्रकार नहीं है-
(क) काया (ख) मन
(ग) वचन (घ) अर्थ (घ)

(o) सम्पूर्ण लोकाकाश में निगोद के गोले भरे हुए हैं-
(क) अनन्त (ख) असंख्यात
(ग) संख्यात (घ) क्रोडाक्रोड (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) अतीत और अनागत पर्याय को लक्ष्य में रखकर पदार्थ में वैसा व्यवहार करना द्रव्य निक्षेप है। (हाँ)
(b) रूप रहित निरंजन निर्मल, सिद्ध भगवान का ध्यान करना रूपस्थ ध्यान है। (नहीं)
(c) श्री विमलनाथ स्वामी का शासन काल 9 सागर था। (हाँ)
(d) श्री नमिनाथ स्वामी की माता का नाम पद्मा था। (नहीं)
(e) ईर्यापथिक कर्म के बंधक वीतराग उपशांत, क्षीणमोह और सयोगी केवली गुणस्थान में रहने वाले जीव हैं। (हाँ)
(f) ईर्यापथिक बंध में सादि सपर्यवसित भंग ही पाया जाता है। (हाँ)
(g) बांधा, नहीं बांधता है, बांधेगा, ये चौथा भंग है। (नहीं)
(h) एक भव आसरी ईर्यापथिक बंध में छठा भंग कहीं नहीं पाया जाता है। (हाँ)
(i) अभव्य जीव दूसरे गुणस्थान से आगे के गुणस्थान प्राप्त नहीं कर पाता है। (नहीं)
(j) जम्बूद्वीप सभी द्वीप समुद्रों के बीच में रहा हुआ है। (हाँ)
(k) आवर्जीकरण का काल संख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त का है। (नहीं)
(l) तेउकाय और वायुकाय में 47 में से 26 बोल पाये जाते हैं। (हाँ)
(m) विनयवादी के 84 भेद होते हैं। (नहीं)
(n) निगोद के जीव अव्यवहार राशि में ही होते हैं। (नहीं)
(o) स्याद्वाद का रहस्य अपेक्षा में रहा हुआ है। (हा)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिएः- **15x1 = (15)**

(a)	अधर्मास्तिकाय गुण	(क) कलश	स्थिर
(b)	श्री वासुपूज्य स्वामी का वर्ण	(ख) वर्तन	रक्त
(c)	श्री मुनिसुव्रत स्वामी के पिता	(ग) क्रौंच	सुमित्र
(d)	काल द्रव्य का गुण	(घ) भाववेद	वर्तन
(e)	श्री मल्लीनाथ स्वामी लांछन	(च) वितिमिर	कलश
(f)	श्री पार्श्वनाथ स्वामी लांछन	(छ) स्थिर	सर्प
(g)	श्री समुतिनाथ स्वामी लांछन	(ज) रक्त	क्रौंच
(h)	विकार भावना	(झ) मोक्ष	भाववेद
(i)	जम्बूद्वीप	(य) सुमित्र	कमल की कर्णिका
(j)	केवली समुद्घात का प्रथम समय	(र) प्रश्न व्याकरण	औदारिक काययोग
(k)	कर्म रूपी अंधकार से रहित	(ल) सर्प	वितिमिर
(l)	अपवर्ग	(व) क्रियावादी	मोक्ष
(m)	सम्यग्दृष्टि	(क्ष) सूत्रकृतांग	क्रियावादी
(n)	द्रव्यानुयोग	(त्र) औदारिक काययोग	सूत्रकृतांग
(o)	चरणकरणानुयोग	(ज्ञ) कमल की कर्णिका	प्रश्न व्याकरण

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मैं भविष्य का वर्तमान में संकल्प करने पर होता हूँ।	भावी नैगम नय
(b)	मेरे बिना कार्य नहीं बन सकता।	कारण
(c)	मैं श्री अरनाथ स्वामी का प्रथम गणधर हूँ।	कुंभ
(d)	मैं श्री कुन्थुनाथ स्वामी की प्रथम आर्या हूँ।	अंजुया
(e)	मैं कार्य की सिद्धि में मूल कारण हूँ।	उपादान
(f)	मेरी दीक्षा पर्याय 2500 वर्ष की है।	नमिनाथ स्वामी
(g)	मेरे गणधरों की संख्या शेष सभी तीर्थंकरों से कम है।	पार्श्वनाथ स्वामी
(h)	मेरा उदय नवें गुणस्थान के प्रथम भाग तक ही रहता है।	वेद
(i)	मेरे तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में नाम कर्म की 20 प्रकृतियों का उदय रहता है।	केवली समुद्घात
(j)	मैं आत्मा को मोक्ष की ओर अभिमुख करता हूँ।	आवर्जीकरण
(k)	मुझमें अनेक प्रकार के परिणाम वाले जीव होते हैं।	समवसरण
(l)	मैं अज्ञान को ही श्रेष्ठ मानता हूँ।	अज्ञानवादी
(m)	मैं क्रियावादी रहते कृष्ण लेश्या में आयु नहीं बांधता हूँ।	तिर्यंच पंचेन्द्रिय/मनुष्य
(n)	मुझमें भव्य तथा अभव्य दोनों प्रकार के जीव अनादि काल से रहे हुए हैं।	व्यवहार राशि
(o)	संसार में मुझसे बढ़कर कोई दूसरा दुःख नहीं है।	जन्म-मरण

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) कार्य अशुद्ध और कारण शुद्ध उदाहरण सहित समझाइए।
जैसे जमाली अनगार ने तपादि क्रिया बहुत ही उच्च कोटि वाली की, किन्तु अपने कदाग्रह को सत्य बनाने का कार्य अशुद्ध था। अतः निह्नवों की गिनती में गिने गये।

(b) 24 तीर्थंकरों के भवों की संख्या लिखिए।
ऋषभदेव स्वामी की भव संख्या 13, शांतिनाथ स्वामी की भव संख्या 12, अरिष्टनेमि स्वामी की भव संख्या 9, पार्श्वनाथ स्वामी की भव संख्या 10, महावीर स्वामी की भव संख्या 27 और शेष तीर्थंकरों की भव संख्या 3 है।

(c) जीव द्वारा ईर्यापथिक बंध एक भव आसरी पहला व दूसरा भंग कहाँ पाया जाता है ?
एक भव आसरी पहला भंग तेरहवें गुणस्थान में दो समय बाकी रहते पाया जाता है। दूसरा भंग तेरहवें गुणस्थान में एक समय बाकी रहते (अंतिम समय में) पाया जाता है।

(d) केवली समुद्घात करने के कोई दो कारण लिखिए।
1. जिनकी केवलज्ञान प्राप्ति के समय आयु 6 माह या कम शेष रहती है।
2. जिनके चार अघाति कर्मों की विषमता रहती है।

(e) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में औघिक उद्देशक से दूसरे उद्देशक में कम होने वाले बोल लिखिए।
विभंग ज्ञान, अवधि ज्ञान, मिश्रदृष्टि, मनयोग, वचनयोग ये 5 बोल कम कर देने चाहिए।

(f) समवशरण के थोकड़े में आठवें उद्देशक का नाम लिखकर उसे परिभाषित कीजिए।
आठवाँ अनन्तर पर्याप्तक उद्देशक-स्वयोग्य पर्याप्तियाँ बांधना प्रारंभ करने के प्रथम समयवर्ती जीव का समावेश इस उद्देशक में किया गया है।

(g) बुद्ध और अबुद्ध जागरणा किसको होती है ?
1. बुद्ध जागरणा-तेरहवें गुणस्थावर्ती तीर्थंकरों एवं सामान्य केवली भगवंतों के होती है।
2. अबुद्ध जागरणा- छठे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक के साधु-साध्वियों में होती है।

(h) आधेय और आधार को समझाइए।
जगत के घट-पटादि आदि सभी पदार्थ आधेय हैं, पृथ्वी आधार है। पुद्गल आधेय हैं और लोकाकाश आधार है। ज्ञान-दर्शन आधेय हैं और जीव आधार है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) यथार्थ वस्तु अयथार्थ उपमा को समझाइए।
नारकी, देवों, युगलियों का पल्योपम का आयुष्य है, किन्तु इसे समझाने के लिए एक योजन प्रमाण कुँए के अन्दर बाल भरना आदि उपमा अयथार्थ है, क्योंकि ऐसा किसी ने किया नहीं है। किन्तु यह तो केवलियों ने अपने ज्ञान में देखा, जिसका प्रमाण बतलाया है।

(b) ईर्यापथिक बंध के 8 भंगों में से चौथा भंग किस अपेक्षा से मिलता है ?
चौथा भंग चौदहवें गुणस्थान के पहले समय में पाया जाता है। क्योंकि तेरहवें गुणस्थान के अंतिम समय में तो ईर्यापथिक बंध हो रहा था, अब चौदहवें गुणस्थान में शैलेशी अवस्था आ जाने से ईर्यापथिक बंध रूक गया है। चौदहवें गुणस्थान वाला अन्तर्मुहूर्त में मोक्ष जाता ही है अतः भविष्य में भी बंध नहीं करेगा।

(c) केवली समुद्घात में दूसरे समय में स्थिति अनुभाग संबंधी कार्य लिखिए।
दूसरे समय में केवली भगवान शुभ नाम कर्म की 52, साता वेदनीय और उच्च गौत्र इन 54 प्रकृतियों की स्थिति के असंख्यात खण्ड करते हैं और अनुभाग के अनन्त खण्ड करते हैं। स्थिति का खण्ड स्थिति में और अनुभाग का खण्ड अनुभाग में मिलाते हैं और एक खण्ड की स्थिति का और एक खण्ड अनुभाग का शेष रख कर बाकी सभी खण्ड दूसरे समय में क्षय करते हैं।

(d) शुक्ल लेश्या में समवशरण, आयुबंध एवं भवी-अभवी का स्पष्टीकरण कीजिए।
शुक्ल लेश्या में चारों समवसरण पाये जाते हैं। जिसमें क्रियावादी देवता, मनुष्य का और मनुष्य, तिर्यंच (क्रियावादी) वैमानिक का आयुष्य बांधते हैं। नियमा भवी होते हैं। बाकी तीन समवसरण वाले देवता तिर्यंच और मनुष्य का आयुष्य बांधते हैं तथा मनुष्य, तिर्यंच, नारकी को छोड़कर बाकी तीन गति का आयुष्य बांधते हैं। भवी और अभवी दोनों होते हैं।

(e) समवशरण के थोकड़े में दूसरे उद्देशक में पृथ्वीकाय में बोल, समवशरण तथा आयुबंध का उल्लेख कीजिए।
पृथ्वीकाय में बोल 27, इनमें दो समवसरण (अक्रियावादी, अज्ञानवादी) आयुष्य का अबन्ध होता है।

(f) उत्सर्ग और अपवाद मार्ग के कोई तीन उदाहरण लिखिए।
जैसे-उत्सर्ग मार्ग में तीन गुप्ति है, इसकी रक्षा हेतु 5 समिति अपवाद हैं। संयम के महान् रथ को चलाने में उत्सर्ग मार्ग और अपवाद मार्ग दोनों ही धुरी है। 1. सर्वथा अहिंसा का पालन करना उत्सर्ग मार्ग है, किन्तु नदी उतरना, नौका में बैढ़ना, नौकल्पी विहार करना उत्सर्ग में भी अपवाद है। 2. जिनकल्प उत्सर्ग मार्ग है और स्थविर कल्प अपवाद मार्ग है। 3. 'करेमि भंते सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' यह उत्सर्ग मार्ग का पाठ है और 'जयं चरे जयं चिट्ठे' यह अपवाद मार्ग का पाठ है। 4. 'समयं गोयम मा पमायए' यह उत्सर्ग मार्ग है और 'कालेण निक्खमे भिक्खु' यह अपवाद मार्ग है। 5. आचारांग, दशवैकालिक, प्रश्नव्याकरण आदि सूत्रों में जो मुनि-मार्ग है, वह उत्सर्ग मार्ग है और छेद सूत्रों में जो मुनि-मार्ग है, वह अपवाद मार्ग है। 6. परीषह अध्ययन में रोग आने पर औषधि नहीं लेना उत्सर्ग मार्ग है और भगवती तथा छेद सूत्रों में निरवद्य औषधि लेना, अपवाद मार्ग है। इसी तरह षट् द्रव्यों में भी उत्सर्ग और अपवाद समझना चाहिए।
नोटः- इनमें से कोई तीन उदाहरण।

(g) आत्मागम, अनन्तरागम, परम्परागम को समझाइए।
सूत्र गणधरों के लिए 'आत्मागम' है। अर्थ गणधरों के लिए 'अनन्तरागम' है और उनके शिष्यों, प्रशिष्यों के लिए दोनों परम्परागम है।

(h) नाम निक्षेप और स्थापना निक्षेप में अन्तर उदाहरण सहित लिखिए।
नाम यावत्काल यानि चिरकाल तक रहता है और स्थापना स्वल्प काल रहती है। जैसे-लोक का नाम लेना और लोक की स्थापना (नक्शा) देखना। अरिहन्तों का नाम लेना और अरिहन्तों की स्थापना देखना, जम्बूद्वीप का नाम लेना और जम्बूद्वीप का नक्शा देखना।

कक्षा : ग्यारहवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) कुम्भकार घट बनाना चाहता है, इसमें कार्य है-
(क) दण्ड (ख) चक्रादि
(ग) कुम्भकार (घ) घट (घ)

(b) गणधरों के लिए अनन्तरागम है-
(क) सूत्र (ख) अर्थ
(ग) उभय (घ) दोनों ही नहीं (ख)

(c) मुनिसुव्रत स्वामी का वर्ण था-
(क) रक्त (ख) गौर
(ग) कृष्ण (घ) नील (ग)

(d) किस तीर्थंकर के साधुओं की संख्या साध्वियों से अधिक थी-
(क) श्री धर्मनाथ स्वामी (ख) श्री वासुपूज्य स्वामी
(ग) श्री शीतलनाथ स्वामी (घ) श्री अनन्तनाथ स्वामी (क/ घ/ अथवा दोनों)

(e) ईरियावही बन्ध का थेकड़ा चलता है-
(क) भगवती सूत्र (ख) पन्नवणा सूत्र
(ग) अनुयोग द्वार (घ) जीवाजीवाभिगम सूत्र (क)

(f) केवली समुद्घात में प्रवृत्ति नहीं होती हैं -
(क) औदारिक काय योग (ख) औदारिक मिश्र काय योग
(ग) सत्य मनोयोग (घ) कार्मण काय योग (ग)

(g) मिश्र दृष्टि में समवशरण पाया जाता हैं-
(क) क्रियावादी (ख) विनयवादी
(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं (ख)

(h) विनयवादी के विनय का प्रकार नहीं हैं-
(क) काया (ख) वचन
(ग) दान (घ) अर्थ (घ)

(i) स्व आतम को दमन कर, पर आतम को चीन। परमात्म को भजन कर, सो ज्ञानी.....।
रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द है-
(क) दीन (ख) मीन
(ग) प्रवीण (घ) लीन (ग)

(j) सम्पूर्ण लोकाकाश में निगोद के गोले भरे हुए हैं-
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्त (घ) 100 (ख)

(k) पाँचवें गुणस्थानवर्ती श्रावक-श्राविकाओं में जागरणा होती है -
(क) बुद्ध (ख) अबुद्ध
(ग) सुदक्खु (घ) कोई भी नहीं (ग)

(l) चरणकरणानुयोग के अन्तर्गत यह शास्त्र नहीं है-
(क) आचारांग (ख) अन्तगढ़ सूत्र
(ग) निशीथ सूत्र (घ) प्रश्न व्याकरण सूत्र (ख)

(m) कषायों पर विजय पाने में यह अनुयोग विशेष रूप से सहायक बनता है-
(क) द्रव्यानुयोग (ख) चरणकरणानुयोग
(ग) धर्मकथानुयोग (घ) गणितानुयोग (ग)

(n) उत्सर्ग मुनि-मार्ग बताने वाला शास्त्र नहीं है-
(क) आचारांग (ख) दशवैकालिक
(ग) प्रश्न व्याकरण (घ) छेद सूत्र (घ)

(o) नो आगम से भाव निक्षेप का भेद नहीं है-
(क) लौकिक (ख) कुप्रावचनिक
(ग) लोकोत्तर (घ) निक्षेप (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) निगोद के जीव अव्यवहार राशि में ही होते हैं। (नहीं)

(b) श्री पार्श्वनाथ स्वामी की भव संख्या 12 हैं। (नहीं)

(c) प्रथम तीर्थकर श्री ऋषभदेव स्वामी पूर्वभव में ग्यारह अंग सूत्रधारी थें। (नहीं)

(d) ईर्यापथिक बंध सयोगी वीतरागियों को ही होता है। (हाँ)

(e) 9 वें गुणस्थान के प्रथम भाग तक वेद का उदय रहता है, इसके बाद जीव अवेदी बन जाता है। (हाँ)

(f) ईर्यापथिक बंध में एक भव आसरी 7 वाँ भंग नहीं पाया जाता है। (नहीं)

(g) ईर्यापथिक बंध में 7 वाँ भंग भव्य जीव की अपेक्षा से 10 वें गुणस्थान के अंतिम समय में होता है। (हाँ)

(h) केवली समुद्घात में तीसरे समय में मंथान करते हैं। (हाँ)

(i) केवली भगवान के नाम कर्म की 85 प्रकृत्तियाँ सत्ता में रहती हैं। (नहीं)

(j) मिश्र दृष्टि वाले जीव भवी-अभवी दोनों होते हैं। (नहीं)

(k) कोई भी जीव प्रथम तीन पर्याप्ति पूरी किये बिना आगामी भव की आयु का बंध नहीं करता है। (हाँ)

(l) निश्चय की श्रद्वान और व्यवहार की प्रवृत्ति रखना शास्त्रकारों की आज्ञा है। (हाँ)

(m) अर्थागम गणधर के शिष्य के लिए परम्परागम है। (हाँ)

(n) साधु का नदी उतरना, नौका में बैठना, नौकल्पी विहार करना यह उत्सर्ग में भी अपवाद है। (हाँ)

(o) 'युगलिकों का आयुष्य' यथार्थ वस्तु को अयथार्थ उपमा का उदाहरण है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	निगम	(क) अयोध्या	जनपद
(b)	घोससमं	(ख) यदृच्छा	अनुदात्त
(c)	अनुमान प्रमाण	(ग) जनपद	शेषवत
(d)	आलम्बन	(घ) अनुदात्त	अपवाद
(e)	द्रव्यानुयोग	(च) शेषवत	अध्यवसाय
(f)	श्री ऋषभदेव जी की माता	(छ) अपवाद	मरूदेवी
(g)	श्री अजितनाथ जी की जन्म नगरी	(ज) वितिमिर	अयोध्या
(h)	श्री अभिनन्दन स्वामी का लांछन	(झ) अपवर्ग	वानर
(i)	श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रथम आर्या	(य) वानर	सुमना
(j)	श्री वासुपूज्य स्वामी की जन्म नगरी	(र) अध्यवसाय	चम्पा
(k)	जीवघन	(ल) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	घनीभूत जीव प्रदेश वाले
(l)	कर्म रूप अंधकार से रहित	(व) चम्पा	वितिमिर
(m)	अक्रियावादी	(क्ष) सुमना	यदृच्छा
(n)	मोक्ष	(त्र) मरूदेवी	अपवर्ग
(o)	गणितानुयोग	(ज्ञ) घनीभूत जीव प्रदेश वाले	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं निश्चय को प्रकट करने वाला हूँ। — व्यवहार

(b) मैं श्री शान्तिनाथ स्वामी की माता हूँ। — अचिरा

(c) मैं श्री महावीर स्वामी का प्रथम गणधर हूँ। — इन्द्रभूति

(d) मेरा शासनकाल सबसे कम वर्षो का रहा है। — श्री पार्श्वनाथ स्वामी

(e) प्रथम तीर्थकर और मैंने तीर्थकर गौत्र बांधने के 20 बोलों की ही आराधना की थी। — भगवान महावीर स्वामी

(f) मेरी दीक्षापर्याय 24 वें तीर्थकर के शासन काल के बराबर है। — श्री अरनाथ स्वामी

(g) सबसे कम छद्मस्थ काल मेरा रहा है। — श्री मल्लिनाथ स्वामी

(h) मैंने पहले ईर्यापथिक कर्म का बन्धन किया था, मुझे कहते हैं। — पूर्वप्रतिपन्न

(i) मैं सभी द्वीप-समुद्रों में सबसे छोटा द्वीप हूँ। — जम्बूद्वीप

(j) मेरा दूसरा नाम आवश्यक करण भी है। — आवर्जीकरण

(k) मुझमें अनेक प्रकार के परिणाम वाले जीव रहते हैं। — समवशरण

(l) मैं आधार हूँ ज्ञान-दर्शन मेरे आधेय हैं। — जीव

(m) मैं अनुयोग का भेद हूँ और शंकाशील मन को स्थिर करने में विशेष रूप से सहायक बनता हूँ। — द्रव्यानुयोग

(n) संसार में मुझसे बढ़कर कोई दूसरा दुःख नहीं हैं। — जन्म-मरण

(o) मैं पदार्थ के अन्दर गुप्त रूप में रहे हुए वर्णादि धर्म हूँ। — गौण

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) कार्य शुद्ध और कारण अशुद्ध में उदाहरण किसका दिया गया है ?

उ. सुबुद्धि प्रधान और जित शत्रु राजा का।

(b) ईर्यापथिकी बंध में अभवी में पाया जाने वाला भंग लिखिए।

उ. नहीं बांधा,नहीं बांधता है, नहीं बांधेगा।

(c) सर्व से सर्व बंध का आशय क्या है ?

उ. जीव सभी आत्म-प्रदेशों से ईरियावही कर्म बान्धता है अर्थात् जीव के आत्मप्रदेश भी सर्व तथा ईर्यावही कर्म भी सर्व से बांधता है।

(d) ईर्यापथिक बन्ध के थोकड़े में मनुष्य तथा मनुष्यणी की अपेक्षा द्विकसंयोगी 4 भंग लिखिए।

उ. 1. मनुष्य एक मनुष्यणी एक। 2. मनुष्य एक मनुष्यणी बहुत।
3. मनुष्य बहुत मनुष्यणी एक। 4. मनुष्य बहुत मनुष्यणी बहुत।

(e) केवली समुद्घात में चौथे समय में जीव सम्पूर्ण लोक व्यापी कैसे बनता है ?

उ. चौथे समय में मंथान आकार में रहे आत्म प्रदेशों से शेष बचे हुए अन्तरालों को पूर्ण कर सम्पूर्ण लोक व्यापी बनाया जाता है।

(f) विनयवादी किसे कहते हैं ?

उ. स्वर्ग, अपवर्ग (मोक्ष) आदि की प्राप्ति विनय से ही होती है, इसलिए विनय ही श्रेष्ठ है, ऐसा एकान्त मानने वाले विनयवादी कहलाते हैं।

(g) नो संज्ञा बहुता में समवसरण और आयु बंध लिखिए।

उ. एक क्रियावादी समवसरण और वैमानिक आयुष्य का बंध।

(h) रूपातीत ध्यान किसे कहते हैं ?

उ. रूप रहित निरंजन, निर्मल, सिद्ध भगवान का ध्यान करना रूपातीत ध्यान कहलाता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) ईर्यापथिक बन्ध के 8 भंगों में से दूसरा भंग किस अपेक्षा से मिलता है ?

उ. दूसरा भंग 13वें गुणस्थान के अंतिम समय में पाया जाता है, क्योंकि अगले समय में वह जीव 14वें गुणस्थान में चला जायेगा, वहाँ योगों की प्रवृत्ति नहीं होने से ईर्यापथिक बंध नहीं होता है।

(b) केवली समुद्घात नियम से कौन करते हैं ?

उ. जिन केवली भगवन्तों के केवल ज्ञान प्राप्ति के समय आयु 6 माह अथवा उससे कम रहती है,वे नियम से केवली समुद्घात करते हैं।

(c) केवली समुद्घात के प्रथम समय में स्थिति व अनुभाग संबंधी कार्य को लिखिए।

उ. स्थिति के असंख्यात खण्ड करते हैं और अनुभाग के अनन्त खण्ड करते हैं और स्थिति और अनुभाग का एक-एक खण्ड बाकी रखकर शेष सभी खण्डों का क्षय करते हैं।

(d) कृष्णलेशी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में समवशरण, आयुष्य बंध आदि लिखिए।

उ. कृष्णलेशी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में समवशरण चार जिसमें क्रियावादी में आयुष्य अबंध,नियमा भवी। बाकी तीन समवशरण में चारों गति का आयुष्य बंध। भवी-अभवी दोनों।

(e) समवशरण के थोकड़े के दूसरे उद्देशक में मनुष्य में 47 बोलों में से कौनसे बोल प्राप्त नहीं होते हैं?

उ. अलेशी, मिश्रदृष्टि, विभंगज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, नोसंज्ञा, अवेदी, अकषायी,मनयोगी, वचनयोगी, अयोगी ये 11 बोल।

(f) बेइन्द्रिय जीव में समकित होते हुए भी क्रियावादी समवशरण क्यों नहीं पाया जाता है ?

उ. हीयमान परिणाम होने से, अनन्तानुबंधी कषाय का उदय हो जाने से तथा मिथ्यात्व में जाने की नियमा होने से।

(g) सूक्ष्म निगोद को परिभाषित कीजिए।

उ. जिन जीवों के सूक्ष्मनाम कर्म का उदय होने के साथ ही जो अनन्त कायिक भी हों, वे सूक्ष्म निगोद के जीव कहलाते हैं।

(h) स्याद् नास्ति अवक्तव्य को समझाइए।

उ. सिद्धों में अनन्त पर गुणों का नास्तित्व है, सब की व्याख्या एक समय में करना अशक्य है अतः स्याद्नास्ति अवक्तव्य है।